श्रीकृष्ण एवं गोपियाँ सभी यमुना नदी के तट पर आए। दिव्य चिन्मय रास रस आत्मा और परमात्मा के मिलन का परम रस है। वैसे तो ब्रम्ह के लिए वेद में पहले ही कहा गया है "रसोवैसः" मतलब ब्रम्ह ही रस है या ब्रम्ह ही आनंद है। आनंद माने अनंत और शाश्वत सुख जो निर्गुण निराकार ब्रम्ह के उपासक परमहंसों को मिलता है। सगुण साकार भगवान का दर्शन सुख भी इस आनंद का अनंत गुना है। लेकिन निष्काम माधुर्य भाव के प्रेमी केवल दर्शन से भी संतुष्ट नही। तो उनके लिए रास का आयोजन हुआ जिसके लिए वेदों ने कहा "रसतमः परमः"। संस्कृत में तर प्रत्यय का अर्थ है अधिक तम प्रत्यय का अर्थ है सर्वाधिक। जैसे गुह्य माने गुप्त, गुह्यतर माने अधिक गुप्त, गुह्यतम माने सबसे अधिक गुप्त। रसतमः मतलब ही सर्वोच्च रस उसके आगे और एक शब्द जोड दिया परमः माने अंतिम रस। रास का मतलब है रसों का समूह जो जीवों को मिलने वाला सर्वोच्च एवं अंतिम आध्यात्मिक रस है- जिसके परे कोई रस नही।

नारदजी को किसी ने किस का ज्ञान सर्वोपरी है? उन्होंने जबाब दिया था गोपीजन वल्लभ। फिर एक प्रश्न निष्काम प्रेम कैसा होना चाहिए? उन्होंने फिर से वही जबाब दोहराया "यथा ब्रज गोपिकानाम"।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

यमुना नदी का परम सौभाग्य था जो रास उसके किनारे हो रहा था जिसका वो अवलोकन कर रही थी। तट पर रेत सुंदर चमक के साथ चमक रही थी! गायन और संगीत चालू था। गोपियाँ और श्रीकृष्ण एक दूसरे के साथ गले में, कमर में हाथ डाले नृत्य कर रहे थे। श्रीकृष्ण गोपियों की सराहना कर रहे थे। गोपियाँ अपरिमित दिव्य चिन्मय खुशी का अनुभव कर रही थी जिससे ज्ञानी कहलवाने वाले परमहंस भी अन्जान थे। इस रास रस के लिए लक्ष्मी बडी तपस्या की, लेकिन वृंदावन में प्रवेश नहीं तक नही कर सकी। कभी श्रीकृष्ण तो कभी गोपी एक दूसरे के लिए विभिन्न गाने गा रहे थे। नृत्य कदम कैसे लयबद्ध और निर्दोष थे!

जैसे कि वे सभी गायन और नृत्य की कला में विशेषज्ञ हैं। पूरे वातावरण पर पूर्णिमा की अल्हादक प्रकाश से साथ जादूभरा हो गया था! सुगंध से भरी सौम्य हवा कितनी मनभावन थी!

गोपियाँ परम सुखद प्रेमरस में इतनी डूब गयी थी कि उनके कोई और नजर ही नही आया। प्रत्येक गोपी को लगा कि श्रीकृष्ण सब गोपियों को छोडकर केवल उसके पास आये है। इससे गोपियों को अहंकार हो गया। प्रत्येक गोपी ने सोचा, 'मुझे देखो! मैं कितना सुंदर और आकर्षक हूं! स्वयं भगवान श्रीकृष्ण मेरे दिवाने होकर मेरे पीछे घूम रहे हैं! मुझ में कोई विशेष बात है जो श्रीकृष्ण मुझे सबसे ज्यादा प्यार करते है! '

जब श्रीकृष्ण ने देखा कि गोपियों को अहंकार हो गया, तो उन्होंने उस अहंकार को निकालने का फैसला किया क्योंकि अहंकार आनंद को बढ़ने की अनुमति नहीं देता। श्रीकृष्ण एक गोपी (राधा) को लेकर रास से गायब हो गये !! प्रथम ग्रासे मक्षिका पातः। इस प्रकार रास अभी शुरू हुआ था और उसमें रूकावट आ गयी। रास बंद हो गया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132